॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ [01]

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ [02]

महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ [03]

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥ [04]

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ [05]

शंकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग वंदन॥ [06]

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ [07]

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ [08]

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥ [09]

www.nikunjyatra.com

भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे॥ [10]

लाय सजीवन लखन जियाए।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाए॥ [11]

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ [12]

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ [13]

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥ [14]

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ [15]

www.nikunjyatra.com

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ [16]

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना॥ [17]

जुग सहस्र योजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ [18]

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥ [19]

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ [20]

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ [21]

www.nikunjyatra.com

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना॥ [22]

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ [23]

भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥ [24]

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ [25]

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ [26]

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ [27]

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥ [28]

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ [29]

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥ [30]

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥ [31]

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ [32]

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥ [33]

www.nikunjyatra.com

अंतकाल रघुवर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ [34]

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्व सुख करई॥ [35]

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ [36]

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ [37]

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ [38]

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ [39]

www.nikunjyatra.com

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ [40]

॥ दोहा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

www.nikunjyatra.com